BA-III
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - पँचम
व्याख्यान-1

1.

प्रो० संजीत कुमार राम
(अतिथि व्याख्याता)
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U)

मैथिली साहित्यक इतिहास
(आधुनिक काल)

Topic- आधुनिक महाकाव्यक विकास

महाकाव्य अतिदीर्घ आ विस्तृत आकार-प्रकारक ओ काव्यकृति थिक जाहिमे कोनो राष्ट्रक एक अथवा अनेक वीरक वीरतापूर्ण कार्य आ उत्तेजनापूर्ण साहसिकताक दिग्दर्शन हो। कथा-निर्माणमे उत्तमता, चरित्र आ विचारक श्रेष्ठता, संदेश-प्रेषणमे महिमामयता, अभिव्यक्तिगत उत्कर्ष आ शैलीक पूर्णता एकर किछु प्रमुख विशेषता थिक। उत्तम महाकाव्य मानव-मूल्य आ सार्वभौम समस्याक एक युग प्रवर्तक कार्य थिक। ओ सांस्कृतिक उत्तराधिकारक उद्घाटन करैत अछि। परिवेशक भिन्नताक कारण थोड़ बहुत अन्तर रहितो पूर्वक महाकाव्यक धारणा पश्चिमसँ मेल खाइत अछि।

आधुनिक मैथिली साहित्यक लेल गर्वक विषय थिक जे एकरा लग एहन बहुतो महाकाव्य छैक जे भारतीय साहित्यमे स्वीकार योग्य अछि। आधुनिक काल सर्वाधिक दर्शनीय प्रवृत्ति थिक। मध्यकालक राधाकृष्णक प्रेमातुर गीतक रोमांचक सुखक विरुद्ध रामकाव्यक आविर्भाव। विद्यापतिक प्रभाव तेहक विमुग्ध-कारी छल जे बहुत समयधरि ओ काव्यात्मक मंचकेँ छपने रहल। परिणामतः कालान्तरमे काव्यात्मक डुर एकरस

आ बेतुरा होइत चलि गेल। हमरालोकनि देखि चुकल छी जे चन्दाझाक आविर्भाव संग मैथिली कवितामे कोनो समग्र रूपसँ नवयुगक सूत्रपात भऽ गेल। मिथिला भाषा रामायण वास्तवमे एक चिरस्थायी उपलब्धि थिक जे मैथिली कविताके तानि अनलक आओर आधुनिक युगक शुभारम्भ कयलक। चन्दाझाक बाद ~~कतेक~~ आओर कवि थिक जे महाकाव्यक आनु बदलामे खूब योगदान देलनि :- जेना - भोलालाल दासक - रमेश्वरचरित मिथिला ~~[illegible]~~ रामायण (1914) ई० मे प्रकाशित भेल। मैथिली क्षेत्रमे रामायणक होएब युगविधायक प्रस्तुति थिक। सीताराम झा - अम्बचरित (1956), मनबोधक कृष्णजन्मक आदर्शपर रामकथाकेँ एक नव आयाम देल अछि। जीवनाथ झा - रावण वध (1955), वैद्यनाथ मल्लिक 'विधु' - सीतायन (1974), कुँवर रघुनन्दन दास - सुभद्रा हरण (1959), काशीकान्त मिश्र 'मधुप' - राधाविरह (1969), तंत्रनाथ झाक - कीचकवध (1961), कृष्णचरित (1976), बबुआजी झा 'अज्ञात' - रुक्मिणीहरण (1980), कांचीनाथ झा 'किरण' पराशर (1988), दीनानाथ पाठक 'बन्धु' - चाणक्य (1965), मार्कण्डेय प्रवासी - अगस्त्यायनी (1980), सुरेन्द्र झा 'सुमन' - दत्तवती (1987), मतिनाथ मिश्र - जय राजा सलहेस (1978), धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र' - त्रिखण्ड (1984), मणिपद्म - अनंग कुसुमा (1999)।

मैथिली महाकाव्यक एहि संक्षिप्त विवरणसँ हमरालोकनिकेँ स्वरूप आ प्रकारक बोध होइत अछि। मैथिली महाकाव्य दुःख दर्दसँ पीड़ित मानवताक लेल प्रेम, दया आ शान्तिक सन्देश देत अछि। राम आ कृष्णपर आधारित महाकाव्य भारतीय साहित्यमे अपन स्थान अछि जाहिपर मैथिलीकेँ गर्व होयब सर्वथा संगत थिक।

Sanjit Kumar

Scanned by TapScanner